



आजामुख



केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान समाचार पत्र

www.cirg.res.in



शीघ्र शंवाद...



बकरी एक महत्वपूर्ण पशु प्रजाति है। विकासशील देशों के ग्रामीण परिवेशों में जीविकोपार्जन हेतु इसे सर्वोत्तम आय का श्रोत माना जाता है। बकरी की अदम्य जनन क्षमता, आहार एवं प्रबन्धन की अल्प आवश्यकता, कम दाम, उत्तम अनुकूलनता, उत्तम आहार परिवर्तन क्षमता त्वरित लाभ तथा अल्प हानि सम्भावित व्यवसाय होने के कारण बकरी पालन को एक अच्छा व्यवसाय माना गया है। विकासशील देशों में विश्व की कुल बकरियों का 80 प्रतिशत पाया जाना इस व्यवसाय की लोक प्रियता को दर्शाता है। वर्तमान समय में भारत में विश्व की सर्वाधिक बकरियों हैं। कुल 4 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ती इनकी संख्या भारत के करोड़ों ग्राम वासियों तथा शहर के आस-पास के क्षेत्रों के परिवारों के लिए आय के मुख्य साधन है। वास्तव में बकरी बहुउपयोगी पशु है। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार बकरी का महत्व मानव जीवन में शनै-शनै बढ़ रहा है और बकरी को आगामी कुछ वर्षों में भविष्य के एक खाद्य सुरक्षा प्रतीक के रूप में देखा जायेगा। मेरे अपने अनुभव के अनुसार बकरी पालन आज भी भारत में सुव्यवस्थित उद्योग नहीं बना पाया है और इसको वैज्ञानिक रूप से विकसित व्यवसाय के रूप में स्थापित करने की आवश्यकता है। उत्तम प्रजनक बकरों की कमी, स्वास्थ्य सुविधा एवं आहार की अनुपलब्धता, चरागाहों की कमी, सिल्वीपाश्चर तंत्र की अल्प जानकारी एवं व्यवस्थित बकरी

उत्पादों (दूध एवं मांस) की खरीद फरोख्त अव्यवस्था जैसी समस्याएँ आज भी इस व्यवसाय को स्थापित होने देने में बाधक है।

केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान के निदेशक के रूप में मुझे अपने वैज्ञानिक सहयोगियों से कहना कि बकरी पालन को एक उद्योग के रूप में विकसित करने के लिए उन्हें अपनी सोच को बहुआयामी बनाना होगा और अपने शोध में उन सभी समस्याओं को सम्बोधित करना होगा, जो इस मार्ग में बाधक है। आवश्यकता है कि हम अपनी परियोजनाओं को अधिकाधिक रूप से कालानुकूल बनायें और यथा सम्भव कृषकोपयोगी बनाने के लिए समय-समय पर अपने कार्यों का मूल्यांकन करें। उन्नत नस्ल की बकरियाँ विकसित करना उत्पादन के लिए अति महत्वपूर्ण विषय है तथापि उत्तम स्वास्थ्य एवं आहार को प्राथमिकता दिये जाने की आवश्यकता है क्योंकि इनके अभाव में अच्छे बकरी उत्पादन की कल्पना सम्भव नहीं होगी। बकरी स्वास्थ्य के लिए जहां संक्रामक रोग एक गम्भीर समस्या है वही आहार सम्बन्धित रोग भी बकरी उत्पादन को प्रभावित करते हैं। असंतुलित आहार विशेष रूप से खनिज लवणों से अल्पपूरित आहार जिसमें कैल्शियम, फास्फोरस, जिंक, कॉपर, सैलिनियम, आयोडीन की कमी हो जनन से सम्बन्धित रूग्णताओं को जन्म देते हैं। अतः बकरी के स्वास्थ्य एवं उत्तम आहार को सुनिश्चित करने के लिए वैज्ञानिक प्रयत्नों से कुछ ऐसी कृषक सुलभ तकनीकियों को विकसित करने की आवश्यकता है जिनका उपयोग कर किसान बकरियों के उत्पादन को अक्षुण्ण रख सके। वातावरण के अति परिवर्तन भी बकरियों के उत्पादन को प्रभावित करते हैं। विगत कुछ वर्षों के वातावरणीय परिवर्तनों ने एक नई चर्चा को जन्म

संपादक मंडल

अध्यक्ष : दिनेश कुमार शर्मा

सदस्य : भुवनेश्वर राय, विवेक गुप्ता, हरिऔध तिवारी

टंकण : अरूण सिंहल

छायांकन : सतीश चन्द्रा

केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम, फरह 281 122, मथुरा (उ.प्र.) भारत

www.cirg.res.in

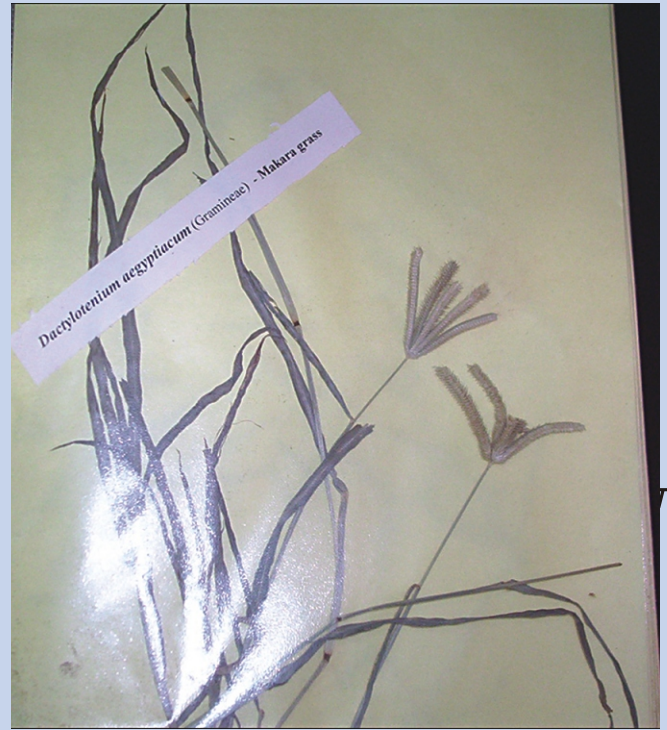
दिया है जिसका मुख्य विषय है कि कैसे वातावरण परिवर्तन के दुष्प्रभाव को कम कर बकरी उत्पादन को सतत रखा जा सके क्योंकि वातावरण परिवर्तन से होने वाले वैश्विक उष्मण का प्रभाव कभी-कभी कीट आक्रमण, विषाणु-जीवाणु जनित रोग प्रक्रिया पर पड़ता है। इसके फलस्वरूप हमें उनके निदान एवं रोकथाम के लिए शोध करना होगा। इसके साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि वातावरण प्रदूषण को भी सन्तुलित किया जा सके।

मेरी दृष्टि में सबसे अधिक महत्वपूर्ण विषय है कि प्रयोगशाला जनित शोध परिणामों को विस्तारित कर देश के कोने-कोने में पहुँचाया जाए जिससे कि विकसित तकनीकियों का लाभ सुदूर क्षेत्र के बकरी पालकों को मिल सके। इसके लिए आवश्यक है एक ऐसे कृषक-उद्योग-वैज्ञानिक पारस्परिक संचार प्रणाली विकसित हो जिससे लाभ उठा कर बकरी पालन में लगे कृषक एवं उद्यमी

तात्कालिक रूप से अपनी समस्याओं का वैज्ञानिक समाधान कर सके। मुझे आशा है कि विभिन्न विषयों से सम्बन्धित शोध में लगे वैज्ञानिकों के साथ हम इन बिन्दुओं पर विचार कर बकरी पालन को आगामी वर्षों में एक उद्योग के रूप में विकसित कर इस व्यवसाय से जुड़े परिवारों को आय का एक अच्छा साधन प्रदान करने के साथ-साथ देश की प्रगति में भागीदारी सुनिश्चित कर सकेंगे।

मकरा घास (खरपतवार) का बकरी आहार में प्रयोग

मकरा घास को मुख्य रूप से एक खरपतवार के रूप में पहचाना जाता है। इसका वानस्पतिक नाम डाटाईलाटेनुइम इजिप्टिकम है। यह पौधा घास कुल (Graminae-Family) से सम्बन्धित है। सामान्यतः यह खेतिहर व बेकार पड़ी जमीन पर वर्षा ऋतु में बहुतायत से पाया जाता है। संस्थान में अध्ययन के दौरान मकरा घास को वर्षा ऋतु में एकत्रित किया गया तथा सुखा कर 1-2 इन्च लंबे टुकड़ों में काटकर रख लिया गया। वर्षा के उपरान्त मकरा घास को दाना मिश्रण के साथ 60:40 में मिलाकर गोलीनुमा दाना (Pellets) के रूप में सम्पूर्ण आहार तैयार किया गया। इस गोलीनुमा सम्पूर्ण आहार का प्रयोग 6-8 माह के बरबरी नस्ल के बच्चों पर करने पर शारीरिक भार में 79.16 ग्रा. की औसत दैनिक वृद्धि पायी गई। बकरी के बच्चों द्वारा इस सम्पूर्ण आहार के द्वारा अपने शारीरिक भार का 5.07 प्रतिशत शुष्क पदार्थ ग्रहण किया गया तथा प्रति किग्रा. शुष्क पदार्थ पर 3.82 ली. पानी पिया गया। मकरा घास से निर्मित सम्पूर्ण आहार के शुष्क पदार्थ की पाचकता 56.17 प्रतिशत पायी गई। कुल पाच्य तत्व व पाच्य सरल प्रोटीन का प्रतिशत क्रमशः 54.28 व 5.40 पाया गया। इस प्रकार से वर्षा-ऋतु में उपलब्ध मकरा घास को वर्षा उपरान्त अथवा चारे की कमी वाले महीनों में प्रयोग में



ला कर अनुपयोगी घास (खरपतवार) से बकरी पालन में आर्थिक लाभ को बढ़ाया जा सकता है।

- प्रभात त्रिपाठी

सभा

कृषि आर्थिक एवं नीति अनुसंधान राष्ट्रीय केन्द्र नई दिल्ली से पधारे 35 प्रशिक्षणार्थियों के लिए एक सभा का आयोजन दिनांक 27 जुलाई 2012 को किया गया जिसमें बकरी पालन आधारित आधुनिकतम एवं भविष्य सम्भावी बिन्दुओं पर चर्चा की गयी।



बकरी उत्पादकता बढ़ाने के लिए वरण प्रक्रिया

वरण से तात्पर्य अच्छे गुणों वाले पशुओं का चुनाव करना है जबकि निष्कासन से तात्पर्य अवांछनीय पशुओं को रेवड़ से निकाल देना है। रेवड़ में निष्कासन 10-15 प्रतिशत तक किया जा सकता है। पशु उन्नयन को सफल बनाने के लिये वरण एक महत्वपूर्ण तरीका है। इसके प्रयोग से बकरियों की आगे की पीढ़ियों में सुधार किया जा सकता है। वरण का मुख्य उद्देश्य आगे आने वाली पीढ़ियों में पहली पीढ़ी की अपेक्षा अधिक सुधार करना है जिससे आगे की पीढ़ियों में वो गुण पैदा किये जा सकें जिससे बकरियों में उत्पादन बढ़े और किसान को अधिक से अधिक लाभ हो सके।

वरण के आधार:- बकरियों का वरण कैसे पर किया जाये इसके लिये वैज्ञानिकों ने मुख्यतः पाँच आधार दिये हैं।

1. व्यक्तिगत गुण आधारित वरण
2. पारिवारिक गुण आधारित वरण
3. संतति गुण आधारित वरण
4. पिता सूचकांक विधि (सायर इन्डेक्स)
5. घेरा वृत्त प्रदर्शन वरण

(1) व्यक्तिगत गुण आधारित वरण:- इसे समूह वरण भी कहते हैं। इस विधि में प्रत्येक जानवर के गुणों के आधार जैसे रंग, स्वास्थ्य, वजन, दुग्ध उत्पादन आदि पर उसका चयन किया जाता है। इस विधि से एक समय में एक बड़े समूह के पशुओं का चयन आसानी से किया जा सकता है। सन्तान के मूल्यांकन करने पर इस विधि में शीघ्र ही ज्ञात हो जाता है कि उत्पन्न हुई नई संतान कितनी उन्नत हुई है। इस विधि में पशुओं का वरण करने में समय ज्यादा

लगता है क्योंकि पशु वयस्क होने पर ही अपने सभी गुण प्रकट कर सकता है तभी उसके आधार पर उसका चयन या निष्कासन हो पाता है। कभी कभी पशु में उन्नत गुण वातावरण (खाना-पीना या प्रबन्धन आदि) के कारण दिखते हैं जिससे उन पशुओं के वरण से आने वाली संतति में लाभ नहीं मिलता।

(2) पारिवारिक गुण आधारित वरण:- इस विधि में पशुओं का चयन पशुओं के पूर्वजों तथा सम्बन्धियों के गुणों के आधार पर किया जाता है अर्थात् अगर पशु के माता पिता तथा अन्य सम्बन्धी उच्च गुणों वाले हैं तो उन पशुओं में भी उच्च गुण होने की सम्भावना ज्यादा रहती है। अतः उनका चयन किया जाता है। इस विधि में पशुओं का चयन कम उम्र में कर लिया जाता है।

(3) संतति गुण आधारित वरण:- इस विधि में नर पशुओं की 10-15 संतानों, जो कि अलग-अलग मादाओं से हों, के गुणों का अध्ययन कर लिया जाता है। अगर उनकी संताने उच्च गुणों वाली पाई जाती है तो उन नर पशुओं का चयन कर लिया जाता है। इस विधि का प्रयोग मुख्य रूप से प्रजनन के लिये नर के चयन के लिये ज्यादा उपयोगी रहता है। इस विधि में सन्तानों के गुणों का अध्ययन करने के लिए काफी समय तक इन्तजार करना पड़ता है जिससे अच्छे नरों अथवा पशुओं का चयन समय पर नहीं हो पाता तथा उनका मूल्यवान जीवन काफी समय तक बेकार रहता है। ज्यादा समय लगने से यह विधि काफी महँगी हो जाती है।

(4) पिता सूचकांक विधि (सायर इन्डेक्स):- पिता सूचकांक वह साधन है

जिसके द्वारा अंकों में संतति परीक्षण प्रकट किया जाता है। इसमें किसी भी नर की इस योग्यता को नापा जाता है जिससे वह अपने गुणों को अपनी संतानों में भेजता है। यह प्रायः उन गुणों के लिए प्रयोग में लाया जाता है जिनको वह नर स्वयं प्रदर्शित नहीं कर सकता, जैसे- दुग्ध उत्पादन आदि। कई प्रकार के पिता सूचकांक का प्रयोग किया जा सकता है। किसानों के प्रयोग में आने लायक मुख्य रूप से दो आधार हैं।

(अ) पुत्रियों का औसत उत्पादन अथवा पुत्रियों की योग्यता सूचकांक:- इस विधि में उन सभी मादा संतानों का औसत उत्पादन लेकर मूल्यांकन किया जाता है जो कि अलग-अलग मादाओं से परन्तु एक नर से उत्पन्न हुई हैं और अधिक औसत उत्पादन वाले संतानों के पिता/नर का चयन कर लिया जाता है। इस विधि में हानि यह है कि इसमें उन मादाओं की योग्यता पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता जिसका उस नर से समागम नहीं होता है।

(ब) माता तथा पुत्री में सीधी तुलना:- इस विधि में माता एवं पुत्री दोनों के औसत उत्पादन को लिया जाता है और अधिक उत्पादन वाले पिता/नर का चयन कर लिया जाता है। इस विधि में मुख्य दोष यह है कि माता एवं पुत्री दोनों का उत्पादन एक ही अवस्था में नहीं लिया जा सकता।

(5) घेरा वृत्त प्रदर्शन वरण:- इसमें पशुओं को एक घेरे में घुमाते हैं तथा चयन के लिये गुणांकन पत्र का प्रयोग करते हैं। पशु के गुणों को देखकर उसको अंक दिये जाते हैं तथा अधिक अंकों वाले पशुओं का वरण कर लिया जाता है। एक विशेषज्ञ अथवा एक से ज्यादा विशेषज्ञ पशुओं को अंक देते हैं। अच्छा पशु घोषित कर

पारितोषिक देने के लिए यह विधि मेलों या प्रदर्शनियों में प्रयोग में लाई जाती है।

वरण की विधियाँ:-

(1) **अनुक्रमिक विधि:-** इस विधि में चयन के लिये एक समय में एक ही गुण के लिये पशु का चयन किया जाता है। जब एक गुण के लिए पशु का पूर्ण विकास हो जाता है तब पशु का दूसरे गुण के लिये वरण किया जाता है। इस प्रकार तीसरे, चौथे तथा बाद के गुणों के लिये यह प्रक्रिया चलाई जाती है। इस विधि में जिस गुण के लिये पशु का वरण किया जाता है उसकी आनुवंशिकी प्रगति तीव्र गति से होती है परन्तु अन्य गुणों में ज्यादा सुधार नहीं होता।

(2) **स्वतन्त्र स्तर पर छटाई:-** इस विधि में एक साथ कई गुणों के लिये पशु का चयन करते हैं तथा प्रत्येक गुण के लिए कम से

कम वाला स्तर तय कर लेते हैं कि इस स्तर से अगर कोई गुण कम पाया जाता है तो पशु का चयन नहीं किया जायेगा। इस विधि से यह हानि होती है कि अगर कोई पशु कई गुणों के लिए अच्छा है परन्तु एक अन्य गुण के लिये भी उसका स्तर ठीक नहीं है तो उस पशु का चयन नहीं किया जा सकता।

(3) **वरण सूचकांक अथवा सम्पूर्ण गुणांकन विधि:-** इस विधि में प्रत्येक गुण के लिये इसके आर्थिक महत्व के आधार पर अंक दे दिया जाता है। इसमें उस गुणों की वंशागतित्व तथा सह सम्बन्ध को भी देखा जाता है। सभी गुणों के अंकों को जोड़कर पशु की संयुक्त प्रजनन क्षमता निकाली जाती है। जिसके आधार पर पशु का वरण किया जाता है।

- साकेत भूषण



फ्रांस की महारानी द्वारा 1787 में शाही रैम्बुलेट डेयरी में स्थापित एमेल्लिया एवं जुपिटर की बकरी की मूर्ति।

2.3 करोड़ वर्ष पूर्व बकरी एवं गोवंश के पूर्वज एक थे

हाल ही में घरेलू बकरी के प्रथम जीनोम अनुक्रम से पता चला है कि 2.3 करोड़ वर्ष पहले बकरी एवं गाय के पूर्वज एक ही थे। बकरी जीनोम अब तक लघुरूमंथी जीनोम का प्रथम सन्दर्भ है एवं आशा की जाती है कि इस जानकारी द्वारा रूमंथी एवं रूमनहीन पशुओं के गुणों को समझने के लिए भविष्य में काफी मदद मिलेगी। इसके द्वारा एस.एन.पी. संकेतकों की पहचान कर बकरी प्रजनन में और बायोमेडीकल प्रारूप एवं बायोरियेक्टर के रूप में बकरी को विकसित करने में मदद मिलेगी। इस शोध के लिए अगली जनरेसन सीक्वेसिंग (एन.जी.एस.) एवं सम्पूर्ण जीनोम मैपिंग तकनीकियों का समाकलित रूप उपयोग किया गया। वंशावली वृक्ष जो बकरी, गौवंश, अश्व, कुत्ता एवं मानव के लिए तैयार किया गया था से पता चला कि बकरी एवं गाय के पूर्वज 2.3 करोड़ वर्ष पूर्व समान थे। तुलनात्मक विश्लेषण करने से पता चला है कि 44 त्वरित विकासशील जीन धनात्मक चयन प्रक्रिया में थे जिसमें से 7 का सम्बन्ध प्रतिरोधात्मकता से था और 3 जीन पिटियुटरी हार्मोन से

सम्बन्ध रखते थे। प्रतिरोधकता जीन की उपस्थिति गोवंशीय पशुओं में भी चिन्हित की गई। खोज से पता चला है कि पिटियुटरी हार्मोन का त्वरित विकास बकरी एवं गोवंश के दुग्ध उत्पादन एवं भ्रूण विकास/केश विभिन्नता के विभिन्न गुणों से सम्बन्धित हो सकता है। एम.एच.सी. जीनस प्रतिरोधी तन्त्र में महत्वपूर्ण योगदान रखते हैं। इस अध्ययन में बकरी के एम.एच.सी. जीनस क्रोमोजोम 23 पर स्थापित पाये गये जो क्रमशः 2.25 एम.वी. तथा 360 के.वी. लम्बाई वाले दो क्षेत्र थे। वैज्ञानिकों ने इस अध्ययन में कौशमीयर बकरी के प्राथमिक एवं द्वितीयक केशगुच्छ की ट्रांसक्रिप्टोमिक विश्लेषण किया और बताया कि कुल 51 जीनस दो तरह के सदुद में विभेदित रूप से मुखरित हुए क्रेटिन एवं इससे सम्बन्धित प्रोटीन केस तन्तुओं की मुख्य संरचना प्रोटीन पाई गई जिससे तन्तुओं की गुणवत्ता निर्धारित होती है। इस शोध में कुनिमिंग जीव विज्ञान संस्थान, चाइनीज विज्ञान अकादमी के वैज्ञानिकों की मुख्य भूमिका रही।

श्रोत ऑन लाइन नेशनल बायोटेकनोलोजी, दिनांक 24 दिसम्बर, 2012 लंदन से प्रकाशित

बकरियों में कुकड़िया रोग (काक्सीडियोसिस) तथा उससे बचाव

कुकड़िया रोग (काक्सीडियोसिस) एक परजीवी रोग है जिसका कारक *आइमेरिया* नामक प्रोटोजोआ होता है। इस रोग के लक्षण प्रायः 1-6 माह के आयुवर्ग के मेमनों में देखे जाते हैं।

कुकड़िया रोग के मुख्य लक्षण निम्न प्रकार हैं।

1. पतले दस्त जिसमें खून भी दिखाई पड़ सकता है।
2. पेट दर्द
3. उचित पोषण देने पर भी शारीरिक वृद्धि का रूक जाना।
4. दुर्बलता
5. निर्जलीकरण।
6. रोग प्रतिरोधक क्षमता का कम होना तथा मृत्युदर बढ़ना।

इस रोग का कारक प्रोटोजोआ है जो आहार अथवा पानी के संक्रमण द्वारा मेमनों की आंत्र में प्रवेश करता है तथा पनपता है। इस प्रक्रिया में आंतों की कोशिकाओं को क्षति पहुंचती है तथा पतले खून युक्त दस्त मेमनों को होने लगते हैं। यह रोग आंतों को विशेष रूप से प्रभावित करता है तथा आवश्यक तत्वों का अवशोषण कम कर देता है मेमनों की शारीरिक वृद्धि दर कम हो जाती है। इसके अतिरिक्त रोग प्रतिरोधक क्षमता में भी कमी आ जाती है। छः माह से अधिक आयु की बकरियों में इस रोग के विरुद्ध प्रतिरोधक क्षमता विकसित हो जाती है अतः वयस्क बकरियों में इस रोग के लक्षण दिखाई नहीं पड़ते। परंतु वयस्क बकरियां मेमनों में कुकड़िया रोग का कारण बनी रहती हैं।

उपचार

- 5 सल्फाडायमिडीन 100-200 मि.ग्रा. प्रति किलोग्राम शारीरिक भार के अनुसार 5-7 दिन
- 5 ऐम्प्रोलियम 10-20 मि.ग्रा. प्रति किलोग्राम शारीरिक भार के अनुसार 5-7 दिन
- 5 टोल्याजूरिल 20 मि.ग्रा. प्रति किलोग्राम शारीरिक भार के अनुसार 2-3 दिन

उपरोक्त में से किसी भी एक औषधि का प्रयोग इस रोग में किया जा सकता है।

बचाव के उपाय

1. मेमनों के आहार व पानी को किसी भी स्थिति में वयस्क बकरियों की मेंगनी/मल से दूषित न होने दें।
2. बाड़ों की स्वच्छता पर विशेष ध्यान दें। उनकी नियमित सफाई होनी चाहिए। बाड़ों से नियमित रूप से दो बार प्रातः और सांय मेंगनी/मल हटाना चाहिए। बाड़ा हवादार होना चाहिए।
3. बाड़ों में समय-समय पर बिना बुझे चूने का छिड़काव करें।
4. बाड़ों में उनकी आवश्यकता से अधिक मेमनों को न रखें क्योंकि ऐसी स्थिति में इस रोग के संक्रमण की संभावना बढ़ जाती है।
5. बकरियों के बिछावन को समय-समय पर बदल दें तथा पुराने बिछावन को बाड़े से दूर ले जा कर जला दें।
6. रोग की संभावना की स्थिति में बचाव हेतु सल्फाडायमिडीन 25 मि.ग्रा. अथवा ऐम्प्रोलियम 5 मि.ग्रा. प्रति कि.ग्रा. शारीरिक भार के अनुसार 5-7 दिन तक दें।



कुकड़िया रोग से ग्रसित क्षीण मेमने



कुकड़िया रोग से प्रभावित आंत

- नितिका शर्मा, शिवशरणप्या एन., अनिल कुमार मिश्रा एवं विनय चतुर्वेदी

तीन माह के बकरी मेमनों का वैज्ञानिक पोषण

बकरी पालन से अधिकतम लाभ प्राप्त करने हेतु मेमनों (बकरी के बच्चों) का समुचित विकास तथा मृत्युदर में कमी रखना अति आवश्यक है। वैज्ञानिक तरीके से मेमना पालन-पोषण किया जाए तो उनकी प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है तथा उनकी वृद्धि सामान्य ढंग से होती है। मेमनों की पोषण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक उचित आहार की आवश्यकता होती है। मेमना आहार के प्रमुख अवयव निम्न हैं। समुचित ढंग से तैयार आहार से उनकी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है।

1. खीस:- बच्चों को जन्म के तुरन्त बाद मां का पीला गाढ़ा दूध (खीस) पिलाना अत्यन्त आवश्यक है। इसे जन्म के 24 घण्टे के अन्दर पिलाना चाहिए। इससे प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है तथा मृत्युदर में भी कमी आती है। खीस में प्रोटीन की मात्रा 12-14 प्रतिशत होती है, जिसमें इम्यूनोग्लोब्यूलिनस काफी मात्रा में होते हैं और ये बच्चे के रक्त में समायोजित होकर उनमें रोग प्रतिरोधक क्षमता उत्पन्न करते हैं। खीस पिलाने से बच्चों का पेट साफ होता है और विटामिन ए भी भरपूर मात्रा में मिलता है। खीस की मात्रा बच्चों के शारीरिक भार के 1/10 भाग के बराबर पिलानी चाहिए जिसे 24 घंटे में 2-3 बार में दिया जा सकता है।

2. दूध:- मां का दूध 0-3 माह के मेमनों के भोजन का प्रमुख अवयव है। यह सभी प्रकार के पोषक तत्वों का अच्छा स्रोत माना जाता है। दूध से प्रोटीन, विटामिन तथा खनिज की आवश्यकतानुसार पूर्ति हो जाती है। दूध की मात्रा मेमने के वजन पर निर्भर करती है। साधारणतः मेमने के वजन के 1/10 भाग तक दूध पिलाना चाहिए। दूध मां के थन से अथवा अलग से बोतल द्वारा भी दिया जा सकता है। दूध के उपलब्ध न होने की स्थिति में दुग्ध



विकल्प का प्रयोग किया जा सकता है। बकरी के दुग्ध विकल्प की संरचना केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम, मथुरा से प्राप्त की जा सकती है।

3. हराचारा तथा दाना:- बकरी के मेमनों में रेशेदार आहार के पाचन हेतु उनके रूमेन का विकास जरूरी है। हरा चारा और दाना 2 सप्ताह के पश्चात आहार में समावेशित करने से उनके रूमेन विकास पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। प्रायः हरा चारा इच्छानुसार 2 सप्ताह से 12 सप्ताह तक दिया जाता है। दाना या क्रीप आहार देने से प्रोटीन की उपलब्धता बढ़ती है और दूध की जरूरत कम होती है जिससे बच्चों की अच्छी वृद्धि दर प्राप्त की जा सकती है। दाना या क्रीप आहार में ऊर्जा तथा प्रोटीन की मात्रा तो पर्याप्त होती है परन्तु रेशे की मात्रा कम होती है। इसे मेमने अच्छी तरह पचा लेते हैं। मक्का दाना 45 भाग, मूंगफली की खली 30 भाग, गेहूँ की चोकर 22 भाग, खनिज मिश्रण 2 भाग तथा साधारण नमक 1 भाग मिलाकर मेमनों का आहार घर पर ही बनाया जा सकता है।

3 माह के बकरी के मेमनों की आहार तालिका

उम्र (दिनों में)	अवयव आकार (मात्रा/भोजन संख्या)	हरा चारा	क्रीप आहार (ग्रा.)
1-3	खीस (1/10 भाग शारीरिक भार के, 3)	नहीं	नहीं
4-14	दूध (200-300 मिली. 3)	नहीं	नहीं
15-30	दूध (200-300 मिली. 3)	थोड़ा	थोड़ा
31-60	दूध (300-400 मिली. 2)	इच्छानुसार	100-150
60-90	दूध (200 मिली. 2)	इच्छानुसार	150-200

- रविन्द्र कुमार

‘वैज्ञानिक प्रोटीन क्रान्ति के लिए तैयार रहें’

डा. एस. अय्यप्पन, महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम में दिनांक 22 से 23 दिसम्बर, 2012 को आयोजित एक राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर वैज्ञानिकों को सम्बोधित करते हुये भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डा. एस. अय्यप्पन ने अपने सम्बोधन में कहा कि पशु प्रोटीन मानव आहार का महत्वपूर्ण अंग है केवल पादप से प्राप्त प्रोटीन संतुलित आहार प्रदान नहीं कर सकती, अतः अब समय आ गया है कि वैज्ञानिक प्रोटीन क्रान्ति के लिए तत्पर रहकर सार्थक रूप से कार्य करें। सेमिनार प्रायोजक भारतीय भेड़ एवं बकरी उत्पादन एवं उपयोगिता सोसायटी के बकरी विकास कार्यों की प्रशंसा करते हुये डा. एस. अय्यप्पन ने बकरी की अदम्य उत्पादन क्षमता का बखान किया और उसे खाद्य सुरक्षा की दृष्टि से भविष्य का पशु बताया। उन्होंने जोर देकर कहा कि वैज्ञानिकों का ध्यान कृषि के उत्पादन, लाभ एवं उसकी ख्याति पर केन्द्रित होना चाहिए। सम्मेलन के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता सचिव, पशुपालन, दुग्ध एवं मतस्य विभाग, भारत सरकार श्री जी.सी. पति द्वारा की गई। अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में श्री पति ने कहा कि साधन विहीन कृषि परिस्थितियों में पशुपालन एक अति महत्वपूर्ण व्यवसाय है। भारतीय परिवेश में जहां कृषि मूलतः वर्षा आधारित है बकरी पालन जैसा व्यवसाय लघु एवं भूमिहीन किसानों के लिए आय का एक प्रमुख स्रोत है। सम्मेलन में डा. एस.के. बन्धोपाध्याय, सदस्य कृषि वैज्ञानिक चयन मण्डल एवं प्रोसेसर ए.पी. सिंह, कुलपति, पशुचिकित्सा विज्ञान विश्व विद्यालय एवं गौ अनुसंधान संस्थान, मथुरा की उपस्थिति विशेष रही। सम्मेलन में भारतीय भेड़ एवं बकरी उत्पादक एवं उपयोगिता सोसायटी द्वारा संस्थान के वैज्ञानिक डा. ए.के. गोयल एवं डा. एस.के. सिंह को सम्मानित कर फेलोशिप प्रदान की गई। सम्मेलन में कुल सात वैज्ञानिक सत्र आयोजित किये गए जिनमें लघु रूमन्थी स्वास्थ्य एवं उत्पादन के विभिन्न विषयों पर वैज्ञानिक चर्चा की गई एवं शोध पत्र प्रस्तुत किये गये। इस सम्मेलन में पशु कल्याण पर आयोजित एक विशेष सत्र सभी के लिए आकर्षण रहा। सम्मेलन में उद्योग एवं कृषक पारस्परिक वार्ता सत्र में किसानों ने विशेष रुचि दिखाई।



पुरस्कार

- डा. एस.डी. खर्चे, प्रधान वैज्ञानिक, दैहिकी जनन एवं आवास प्रबन्धन विभाग को दिनांक 13 से 16 सितम्बर, 2012 हैदराबाद में आयोजित तीसरे विश्व जैव प्रौद्योगिकी अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन में शोध पत्र प्रस्तुति के लिए सर्वोत्तम सम्मान प्रदान किया गया।



- 'एग्रीकल्चरल इनपुट एण्ड सर्विस डिलेवरी सिस्टम फोर एकसीलेरटींग ग्रोथ एवं इम्प्रूविंग फार्म इन्कम' विषय पर आई.ए.आर.आई., नई दिल्ली में (9 से 11 अक्टूबर, 2012) आयोजित 20वे वार्षिक सम्मेलन में डा. अनुपम कृष्ण दीक्षित, वरिष्ठ वैज्ञानिक कृषि अर्थशास्त्र को उनके एग्रीकल्चरल इकोनोमिक्स रिसर्च रिव्यू में प्रकाशित लेख के लिए सम्मानित किया गया।
- 29वे समस्त भारतीय वैज्ञानिक एवं तकनीकी निबन्ध प्रतियोगिता में डा. साकेत भूषण, प्रधान वैज्ञानिक द्वारा सहभागिता की गई और सम्मान प्राप्त किया।

बकरी दूध के जानने योग्य तथ्य

- बकरी का दूध क्षारीय प्रकृति का है जबकि गाय के दूध की प्रकृति अम्लीय होती है।
- बकरी दूध में अपेक्षाकृत रूप से कॉलेस्ट्रॉल की मात्रा कम तथा कैल्सियम-फास्फोरस एवं विटामिन की मात्रा अधिक होती है।
- बकरी का दूध प्राकृतिक रूप से सम्मिश्रित और आसानी से पचने वाला होता है।
- बकरी दूध की वसा कणिकाएँ छोटी और गाय दूध की वसा कणिकाओं की तरह संघनित नहीं होती हैं।
- बकरी दूध की पाचन 20 मिनट से कम समय में हो जाता है जबकि गाय दूध के पाचन में पूरा दिन लगता है।



सहयोग

डा. अशोक कुमार, प्रधान वैज्ञानिक के नेतृत्व में उत्तराखण्ड राज्य के तीन गांवों में दिनांक 8 से 10 अक्टूबर, 2012 में पशु चिकित्सा प्रदाय एवं रोग सम्बन्धी जानकारी के लिए कैम्प लगाये गये। इन कैम्पों में बकरी एवं भेड़ पालक किसानों की भारी भीड़ देखी गयी। कैम्प में 457 किसानों की कुल 1780 भेड़-बकरियों में आन्त्र शोथ एवं पी.पी.आर. रोग रोधन के लिए टीकाकरण किया गया। कुल 1935 पशुओं को परजीवी नाशन हेतु दवा पिलाई गई तथा 135 रोगी भेड़-बकरियों को चिकित्सा प्रदान की गई। कैम्प के उद्घाटन समय उपस्थित माननीय कृषि खाद्य प्रसंस्करण, उद्योग एवं संसदीय मामला मंत्री भारत सरकार श्री हरीश रावत जी ने कैम्प गति विधियों में अपनी रूचि दिखाई और संस्थान की क्रिया कलापों की भूरी-भूरी प्रशंसा की। संस्थान द्वारा उत्तराखण्ड के 25 बकरी पालकों को दिये गये प्रशिक्षण का उल्लेख करते हुए मंत्री महोदय ने कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण किसानों के लिए लाभकारी होंगे और केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम की इसमें महती भूमिका है।



स्वास्थ्य, बकरी पालन प्रशिक्षण एवं शिविर/कार्यक्रम

पशु स्वास्थ्य शिविर-

संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा तकनीकी स्थानान्तरण कार्यक्रम के अन्तर्गत मथुरा जनपद के हयातपुर गांव में दिनांक 24 अगस्त एवं 28 अगस्त, 2012 को पशु चिकित्सा शिविर लगाये गये। शिविर के दौरान रोगी भेड़-बकरियों को चिकित्सा प्रदान की गयी तथा रोग रोधन के लिये एफ.एम.डी, ई.टी. एवं पी.पी.आर. का टीकाकरण किया गया। भेड़-बकरियों में कृमि-नाशन हेतु चलाये गये अभियान में किसानों ने भारी मात्रा में भागीदारी की एवं सक्रिय रूप से रूचि दिखाई।



समाकलित बकरी पालन पर संस्थान परिसर के बाहर प्रशिक्षण

बुंदेलखण्ड के महोबा जनपद में चल रहे राष्ट्रीय कृषि नवोन्मेषी परियोजना के अन्तर्गत दिनांक 25 से 26 सितम्बर, 2012 को संस्थान परिसर से परे एक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। प्रशिक्षण का उद्घाटन मुख्य विकास अधिकारी, महोबा श्री वाई.के. उपाध्याय द्वारा किया गया। इस प्रशिक्षण में महोबा जिले के 8 गांवों के कुल 150 किसानों ने भागीदारी की। जिनमें 40 प्रतिशत महिलायें थी। इस प्रशिक्षण में किसानों को समाकलित बकरी पालन के लिये प्रेरित किया गया। प्रशिक्षण से सुदामा पुरी, पर्थनीया, बम्बोरी खुर्द, मारबाड़ा आरी, बुदुआरा, टीकरिया तथा महोकान्त के ग्रामीण किसानों ने लाभ उठाया। इसी प्रकार का दूसरा प्रशिक्षण जो 01 दिन का था 30 सितम्बर, 2012 को राठ में आयोजित किया गया जिसका उद्घाटन केन्द्रीय सलाहकार समिति के सदस्य श्री एल.एन. सिंह एवं डा. डी.पी. सिंह द्वारा किया गया। इस प्रशिक्षण में लाभार्थियों की संख्या 114 रही जिनमें कुल 26 महिलायें थी। प्रशिक्षण का उद्देश्य किसानों की बकरी पालन की जानकारी को पोषित करना था। प्रशिक्षण के दौरान किसानों को प्रजनक बकरों के उचित प्रयोग, प्रजनन प्रबन्धन, मेमना प्रबन्धन के साथ-साथ पोषण, टीकाकरण तथा कृमिनाशन आदि से सम्बन्धित जानकारी दी गयी। किसानों को स्वयं सहायता समूह के द्वारा संसाधन का उचित उपयोग, क्षमता निर्माण एवं राष्ट्रीयकृत बैंकों द्वारा प्रदाय किये जा रहे लाभों के विषय में जानकारी भी उपलब्ध कराई गयी। प्रशिक्षण में मुख्य विकास अधिकारी, उप-संचालक कृषि, निदेशक कृषि शोध संस्थान तथा बैंक से पधारे मुख्य प्रबन्धक एवं विकास अधिकारियों ने व्याख्यान दिये।



बकरी पालन जानकारी एवं चिकित्सा कार्यक्रम

कृषि विज्ञान केन्द्र के तत्वाधान में नावार्ड एवं मानव संसाधन विकास संगठन की एक गैर सरकारी संस्था समिति के सहयोग से अछनेरा के एक गांव कसौती में 29 नवम्बर, 2012 को एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम की ओर से प्रधान वैज्ञानिक डा. बृजमोहन एवं वैज्ञानिक डा. नितिका शर्मा ने भागीदारी की। कार्यक्रम में किसानों को बकरी पालन सम्बन्धित विभिन्न जानकारी के साथ रोगी पशुओं को चिकित्सा प्रदान की गई। कार्यक्रम में आयी हुई बकरियों को अंतःपरजीवी नाशन के लिए औषधि पान कराया गया। आवश्यकतानुसार चिकित्सा सलाह प्रदान की गई।



प्रशिक्षण / कार्यशाला / संगोष्ठी

प्रदर्शनी/किसान मेला

1. दिनांक 18 अगस्त, 2012 को कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग राज्यमंत्री भारत सरकार डा. चरनदास महन्त के संस्थान भ्रमण के समय संस्थान द्वारा विकसित वैज्ञानिक तकनीकियों का प्रदर्शन किया गया।
2. श्री जी.सी. पति, सचिव पशुपालन, दुग्ध एवं मतस्य विभाग भारत सरकार के 15 सितम्बर, 2012 को केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम के दौरे के समय संस्थान विकसित वैज्ञानिक तकनीकियों की प्रदर्शनी लगाई गयी।
3. दिनांक 12 से 14 अक्टूबर, 2012 को नगला चन्द्रभान में आयोजित कृषि एवं ग्रामीण विकास प्रदर्शनी में संस्थान द्वारा भागीदारी की गयी और किसानों को बकरी पालन सम्बन्धित वैज्ञानिक जानकारी उपलब्ध कराई गई।
4. कृषि विज्ञान केन्द्र, मथुरा द्वारा दिनांक 26 अक्टूबर, 2012 को आयोजित कृषि मेले में कृषि एवं पशुपालन प्रदर्शन में संस्थान द्वारा भागीदारी की गई और संस्थान विकसित तकनीकियों का प्रदर्शन किया गया।
5. कृषि जलवायु क्षेत्र-4 (आगरा एवं अलीगढ़) के विराट किसान मेला एवं कृषि विकास प्रदर्शनी में भागीदारी कर संस्थान वैज्ञानिकों ने अपने स्टाल से संस्थान द्वारा विकसित तकनीकियों का प्रदर्शन किया एवं किसानों की बकरी सम्बन्धित विभिन्न विषयों की समस्याओं का निराकरण किया।
6. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा 26 से 30 नवम्बर को तृतीय अर्न्तराष्ट्रीय शस्य विज्ञान सम्मेलन के दौरान आयोजित कृषि प्रदर्शनी में संस्थान द्वारा भागीदारी की गई और संस्थान विकसित तकनीकियों का प्रदर्शन किया गया।



प्रशिक्षण:-

1. राष्ट्रीय केन्द्र कृषि आर्थिकी एवं नीति अनुसंधान (एन.सी.ए.पी.), नई दिल्ली के तत्वाधान में संस्थान द्वारा झारखण्ड राज्य के दुमका जिले के बकरी पालकों को 05 दिन का वैज्ञानिक बकरी पालन प्रशिक्षण दिया गया। दिनांक 02 से 06 सितम्बर, 2012 तक आयोजित इस प्रशिक्षण में कुल 38 बकरी पालकों ने भागीदारी कर लाभ उठाया। इस प्रशिक्षण के आयोजन में ग्रामीण विकास केन्द्र नालन्दा बिहार की मुख्य भूमिका रही।
2. संस्थान द्वारा प्रायोजित 52वें दस-दिवसीय राष्ट्रीय व्यवसायिक बकरी पालन प्रशिक्षण का आयोजन दिनांक 18 से 27 सितम्बर, 2012 को संस्थान के विस्तार शिक्षा एवं सामाजिकी एवं आर्थिकी अनुभाग द्वारा किया गया। इस प्रशिक्षण में विभिन्न प्रान्तों से पधारे कुल 89 किसानों ने भागीदारी की जिनमें 02 महिलाओं भी थी। प्रशिक्षण में कुल 16 राज्यों के किसानों ने लाभ उठाया।

डा. सुधीर कुमार अग्रवाल संस्थान के नये निदेशक

छपते छपते



केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम के नये निदेशक के रूप में दिनांक 01 जनवरी, 2013 को डा. सुधीर कुमार अग्रवाल ने कार्यभार ग्रहण किया। कृषि वैज्ञानिक चयन मण्डल, नई दिल्ली द्वारा चयनित डा. अग्रवाल पूर्व में भारतीय पशु

चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली में पशु पुनरुत्पादन विभाग में प्रधान वैज्ञानिक एवं विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत थे। ज्ञात हो कि डा. अग्रवाल पशु मादा रोग विज्ञान, जनन, भ्रूण प्रत्यारोपण तकनीक व कृत्रिम गर्भाधान के क्षेत्र में जाने-माने वैज्ञानिक और शिक्षाविद है।

डा. सुधीर अग्रवाल का जन्म दिनांक 14 सितम्बर, 1953 को उत्तर प्रदेश के जनपद-बहराइच में हुआ था। आपने बी.वी.एस.सी.एण्ड ए.एच. की उपाधि सन् 1976 में गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पन्तनगर से, एम.वी.एस.सी. सन् 1978 में रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उ.प्र. तथा विद्यावाचस्पति की उपाधि भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली से प्राप्त की।

डा. अग्रवाल शोध एवं अध्यापन का लम्बा अनुभव रखते हैं। अपने वैज्ञानिक जीवन में आप कुल 17 शोध परियोजनाओं से जुड़े रहे हैं जिनमें पांच परियोजनायें बाह्य संस्थाओं जैसे डी.बी.टी., एस. एण्ड टी., एन.ए.टी.पी., एवं एन.एफ.बी.एस. आर.ए. द्वारा पोषित रही हैं। हाल ही में एन.एफ.बी.एस.आर.ए. द्वारा पोषित बहुसंस्था आधारित परियोजना में डा. अग्रवाल ने दल संचालक का कार्य सफलता पूर्वक पूरा किया है।

डा. अग्रवाल का पी.ए.जी.1, कोक्स-2 जीन्स की क्लोनिंग तथा गर्भ स्थापना के लिए उत्तरदायी हार्मोन रिसेप्टर जीन्स के गुणांकन एवं एन्डोमेन्ट्रीअल एपीथिलियम, स्ट्रोमल तथा लूटियल कोशिकाओं के प्रयोगशाला में सम्वर्धन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आपने ऑक्सीटोसिन, प्रोजिस्ट्रोन एवं ईस्ट्रोजन जीन्स की गर्भाशय में अभिव्यक्ति द्वारा ऋतुचक्र को भली-भांति समझने में भी योगदान किया है। चुनिन्दा कोक्स-2 निरोधक, इन्सुलिन, मध्य लुटियल चक्र में जी.एन.आर.एच, भैंस वंश भ्रूण उत्तर

जीवितता एवं जनन क्षमता को बढ़ाने के लिए एन्टीलूटियोलाइटिक रणनीति तैयार करने में आपकी विशेष भूमिका रही। इसके अतिरिक्त सुपर ऑवुलेशन, भ्रूण प्रत्यारोपण, भ्रूण संग्रहण, गौवंश एवं बकरियों में पुनरुत्पादन बढ़ाने के लिए इन्सुलिन के प्रयोग की संभावना एवं पशुओं में बांझपन चिकित्सा हेतु पादप औषधि विकसित करने में भी आपका सक्रिय योगदान रहा है।

डा. अग्रवाल द्वारा अनेक शोध पत्रिकाओं एवं पुस्तकों में अनेक लेख प्रकाशित किये गये हैं। आपके द्वारा लिखित पुस्तक 'रिप्रोडक्टिव टेक्नोलाजी इन बफैलो' एवं 'लैबोरेट्री मेनुअल आन एनीमल गायनिकोलाजी' विद्यार्थियों में विशेष चर्चित रही हैं। डा. अग्रवाल को 13 स्नातकोत्तर तथा विद्यावाचस्पति उपाधिओं के लिए छात्रों के शोध निर्देशन का अनुभव प्राप्त है तथा आपने 118 शोधपत्रों के प्रकाशन के साथ-साथ 54 व्याख्यान विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत किये हैं।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित 21 दिवसीय प्रशिक्षण के संचालक एवं आई.एस.एस.ए.आर. के 21वें राष्ट्रीय सम्मेलन के आयोजन सचिव के रूप में कार्य कर चुके हैं। वर्तमान में आप भारतीय पशु पुनरुत्पादन अध्ययन सोसायटी के अध्यक्ष भी हैं। आप इंडियन जनरल ऑफ एनिमल रिप्रोडक्शन के सम्पादक भी रह चुके हैं।

डा. अग्रवाल को उष्कृष्ट अध्यापन एवं शोध उपलब्धियों के लिए अनेक पुरस्कारों से अलंकृत किया गया है जिनमें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का दलीय शोध पुरस्कार, भारत रत्न डा. सी. सुब्रमण्यम उत्कृष्ट अध्यापक पुरस्कार, आई.वी.आर. आई. सर्वोत्तम अध्यापक पुरस्कार, नील लैंगर लौफ पुरस्कार, वासु स्मृति स्वर्ण पदक, जी.बी. सिंह स्मृति एवं भारतीय दुग्ध संघ पुरस्कार मुख्य हैं। डा. अग्रवाल एन.ए.वी.एस., आई.एस.एस.ए.आर. एवं आई.ए.ए.वी.आर. की फेलोशिप से भी सम्मानित हैं।

विश्वास है कि डा. अग्रवाल के कुशल निर्देशन में संस्थान के बकरी शोध कार्यों को नई दिशा मिलेगी और किसानोपयोगी तकनीकियों के विकास में प्रगति होगी।

सेवा निवृत्ति

केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान निदेशक डा. देवेन्द्र स्वरूप ने अपने 34 वर्ष के अनुसंधान एवं प्रशासनिक कार्य को सफलता पूर्वक पूर्ण करते हुये दिनांक 31 दिसम्बर 2012 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से विदाई ली। अपने सेवा काल में अनेक पदों पर कार्य करते हुए डा. देवेन्द्र स्वरूप ने भारतीय कृषि अनुसंधान सेवा में उत्कृष्ट योगदान दिया। तत्कालीन मथुरा जिले की सादाबाद तहसील के बेदई गांव में जन्मे, डा. देवेन्द्र स्वरूप ने पशु चिकित्सा विज्ञान में विद्यावाचस्पति उपाधि प्राप्त कर अपने शोध कार्य को प्रारम्भ किया। वैज्ञानिक के रूप में पशु स्वास्थ्य पर वातावरण प्रदूषण के दुष्प्रभाव, नृजाति पशु औषध एवं वन्य जीवों के स्वास्थ्य प्रबन्धन में आपने महत्वपूर्ण योगदान दिया। अनेक बाह्य वित्त पोषित परियोजनाओं के समयवक एवं मुख्य अनुसंधान कर्ता के रूप में कार्य करते हुए आपने 170 से अधिक शोध पत्र ख्याति प्राप्त शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित किये। डा. स्वरूप के वैज्ञानिक योगदान को देखते हुये उन्हें अनेक संस्थाओं द्वारा अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया। उनके कार्यकाल में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान को उत्कृष्ट शोध के लिए वर्ष 2010 का सरदार बल्लवभाई पटेल पुरस्कार प्रदान किया। समस्त संस्थान परिवार द्वारा डा. देवेन्द्र स्वरूप को इस अवसर पर भावभीनी विदाई दी गई। इस अवसर पर संस्थान के नये निदेशक डा. एस. के. अग्रवाल एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के ए.डी.जी. डा. बी. एस. प्रकाश भी उपस्थित थे तथा उन्होंने डा. स्वरूप को संस्थान की ओर से स्मृति चिन्ह भेंट किया।



केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान

मखदूम, फरह 281 122, मथुरा (उ.प्र.) भारत

दूरभाष न.: 0565-2763380, फैक्स न.: 0565-2763246

ई-मेल: director@cirg.res.in, वेबसाइट: <http://cirg.res.in>

हेल्पलाइन न.: 0565-2763320